ISSN - 2229-3620
UGC CARE LISTED JOURNAL
TIS

शोध संचार
बुलेटिन

January-March, 2021
Vol. 11, Issue 41
Page Nos. 60-63

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

# आधुनिक कृषि विज्ञान एवं साहित्य का समाज पर प्रभाव

डॉ0 प्रभात सिंह राजपूत*
गरिमा भाटी**

## शोध सारांश

भारत देश में कृशि क्षेत्र में योगदान देने वाले संसाधनों के बारे में बताया गया है भारत के कृशि विश्वविद्यालयों द्वारा दिये जा रहे योगदान के बारे में बताया गया है। कृशि पुस्तकालयों द्वारा समाज को कृशि विज्ञान साहित्य के बारे में उपलब्ध कराए जा रहे ज्ञान के बारे में जानकारी दी गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृशि विकास को लेकर सरकार द्वारा किए गये प्रयास एवं टेलीविजन तथा रेडियो की भूमिका दर्शाई है विभिन्न प्रकार के पुस्तकालयों के बारे में चर्चा करते हुए कृशि विज्ञान साहित्य के क्षेत्र में प्रकाशित हो रही पत्रिकाओं तथा साहित्य का समाज पर प्रभाव रेखांकित किया गया है।

**Keywords :** कृशि विज्ञान, साहित्य, आधुनिक कृशि, कृशक समाज, कृशि पत्रिकाएं

भारत एक कृशि प्रधान देश है कृशि प्रधान देश होने के कारण भारत में कृशि से संबंधित आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु समय समय पर सरकारों द्वारा विभिन्न तरह के प्रयास किये जाते रहे है। कृशि संबंधित विभिन्न आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु भारत में कृशि विस्तार केन्द्रों की स्थापना की गई है आमतौर पर एक स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय के साथ जुड़े हुए ये केंद्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और किसानों के बीच कड़ी के रूप में काम करते है। भारत के सभी कृषि विज्ञान केंद्र 11 कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थानों (अटारी) के अधिकार क्षेत्र में आते है। कृषि विज्ञान केन्द्रों ने भारतीय कृषि पर बहुत ही गहरा प्रभाव डाला है इसकी आधुनिक तथा वैज्ञानिक गतिविधियों, प्रशिक्षण कायक्रमों, प्रदर्शनों और खेतों पर परीक्षण कर भारत को दलहनी फसलों तथा दुग्ध उत्पादन में प्रथम स्थान प्राप्त करने में सहयोग किया है। इन समस्त साधनों ने कृशि के साथ समाज में प्रगति व उन्नति के नये आयाम स्थापित किये है।

आधुनिक युग में कृशि साहित्य के भण्डार के रूप में पुस्तकालय का विशेश योगदान है। इस इलेक्ट्रानिक युग में ज्ञान प्राप्ति के अनेक साधन उपलब्ध है जिनमें रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ आदि प्रमुख है। पुस्तकालय से तात्पर्य हैं पुस्तक्+आलय अर्थात वह स्थान जहॉ पुस्तक रखी जाती है एवं पाठको द्वारा पुस्तक, पत्र पत्रिकाओं आदि का अध्ययन तथा उपयोग किया जाता है, पुस्तकालय कहलाता है। पुस्तकालय में सही पाठ्य सामग्री, अनुसंधान हेतु पाठकों व कर्मचारियों तीनों का समतुल्य महत्व होता है। तीनों में किसी एक की अनुपस्थिति के बिना पुस्तकालय की कल्पना नही जा सकती हैं। कृषि विश्वविद्यालयों और संस्थानों की स्थापना के बाद से कृषि पुस्तकालय राष्ट्र की सेवा कर रहे है। आज, देश भर में कृषि विश्वविद्यालय कृषि के विकास के लिए शिक्षा और अनुसंधान सुविधाएं प्रदान कर रहे है। वर्ष 1964 में, कर्नाटक के पहले कृषि विश्वविद्यालय ने बैंगलोर में कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के नाम से कार्य करना शुरू किया।

वर्तमान में सूचना के क्षेत्र में सम्पन्नता राष्ट्र की सम्पन्नता के परिचायक है आज संदर्भ एवं सूचना तथा प्रलेखन सेवा आधुनिक पुस्तकालय की आवश्यक सेवा तथा कियाकलाप माना जाता है जिस पर पुस्तकालय की लोकप्रियता तथा उपादेयता आधारित होती हैं।

पुस्तकालय सूचना के केन्द्र होते है जहाँ सूचना व ज्ञान को आज के वैज्ञानिक युग में संसाधन, शक्ति एवं मूलभूत वस्तु कहा गया है। इसे न केवल वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय ज्ञान की वृद्धि, विकास तथा अनुसंधान का आवश्यक आधार माना जाता है बल्कि राष्ट्र एवं समाज के आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक बौद्धिक व स्वास्थ्य की अभिवृद्धि के लिए भी आवश्यक साधन माना जाता है।

ज्ञान और सूचना परम्परागत प्रलेखो, पाण्डुलिपियों, पुस्तको, पत्र पत्रिकाओं के रूप में निहित होते है। इनका प्रचुर मात्रा में संग्रहण एव अधिग्रहण पुस्तकालयों में किया जा रहा है।

*सहायक आचार्य एवं प्रभारी विभागाध्यक्ष – पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)
**सहायक निदेशक – युवा मामलात, राजस्थान सरकार, जयपुर (राज.)

ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय के विकास के लिए शासकीय अनुदान के साथ–साथ जनभागीदारी भी अपेक्षित है। जन भागीदारी से नये संदर्भों एवं आयामों को पर्याप्त जोर दिया जाता है। एक कहावत है कि ज्ञान बांटने से बढता है अतः यह आवश्यक है कि पाठ्य सामग्री को संचित करके न रखते हुए पुस्तकालयों को भेंट कर उसके माध्यम से दूसरों को ज्ञान बांटे एवं अपना योगदान पुस्तकालय के विकास में देवे। कृषि विभाग द्वारा कृषकों तक विभागीय योजनाओं की जानकारी तथा उन्नत कृषि ज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिये प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया का योजनाबद्ध रूप से उपयोग किया जा रहा है राज्य स्तर पर कृषि–सूचना शाखा द्वारा एक ओर जहां दैनिक समाचार पत्रों, कृषि पत्र–पत्रिकाओं से तकनीकी प्रसार का समन्वय किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर स्वयं ''खेती री बातां'' बुलेटिन का मासिक प्रकाशन भी किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त मौसमवार प्रमुख फसलों की उन्नत कृषि विधियों की जानकारी, विभिन्न विषयों पर पोस्टर का प्रकाशन, कृषि मार्गदर्शिका तथा खण्ड स्तर पर रबी/खरीफ ''पैकेज ऑफ प्रेक्टिस'' पुस्तिकायें तथा कृषक मित्रवत् साहित्य तैयार कर कृषकों, जनप्रतिनिधियों तथा कृषि से संबंधित संस्थाओं को वितरित किया जा रहा है

राज्य में उपलब्ध इलेक्ट्रोनिक मीडिया दूरदर्शन एवं आकाशवाणी का कृषि ज्ञान के प्रचार–प्रसार में उपयोग करते हुए कृषि विभाग द्वारा दूरदर्शन पर ''खेती–बाड़ी–2'' कार्यक्रम एवं आकाशवाणी पर ''खेती री बातां'' कार्यक्रम चलाये जा रहे है।

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के व्यापक प्रचार प्रसार से पुस्तकालयों के विस्तार को नया आयाम मिलेगा। कई राज्य सरकारों ने शिक्षा को बढावा देने के उद्देश्य से अनेक महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी योजनाएं लागू की है जिससे आवश्यक सफलता भी मिल रही है इससे ग्रामीण शिक्षितों की संख्या बढी है एवं ग्रामीण पुस्तकालयों का भविष्य उज्जवल प्रतीत हो रहा है।

विश्व एवं भारत में पुस्तकालय निम्न है।

1. **शैक्षणिक पुस्तकालय** – जिसके अनतग्रत विश्वविद्यालय पुस्तकालय, महाविद्यालय पुस्तकालय, विद्यालय पुस्तकालय आदि आते है।
2. **विभिष्ट पुस्तकालय** – ऐंसे पुस्तकालय जो कि विषय विशेषज्ञ के अनुसंधान के लिए होते है। जैसे कृषि अनुसंधान के लिए कृषि पुस्तकालय, मेडिकल विज्ञान के लिए मेडिकल पुस्तकालय आदि। इन पुस्तकालय के उपयोगकर्ता विषय विशेषज्ञ एवं संस्थागत पाठक होते है।
3. **जन पुस्तकालय (पब्लिक लाईब्रेरी )** – ऐसे पुस्तकालय जो आम जनता के लिए उपलब्ध होते है इन पुस्तकालय में कोई भी व्यक्ति जाकर अध्ययन कर सकता है, एवं इसकी सदस्यता प्राप्त कर सकता है। भारत में जन पुस्तकालय निम्न है।

अ. **राष्ट्रीय पुस्तकालय** – नई दिल्ली, कोलकाता, चैन्नई एवं मुम्बई

ब. **राज्य पुस्तकालय** – प्रत्येक राज्य में एक

स. **सार्वजनिक मण्डल पुस्तकालय** – आवश्यकतानुसार जैसे राजस्थान में सात सार्वजनिक मण्डल पुस्तकालय है।

द. **जिला पुस्तकालय** – राज्य के प्रत्येक जिले में एक पुस्तकालय

इ. नगर पालिका/नगर/कस्बा पुस्तकालय

ई. खण्ड पुस्तकालय

उ. ग्रामीण पुस्तकालय तथा लघु पुस्तकालय निक्षेप केन्द्र आदि।

इस लेख में ग्रामीण पुस्तकालय, कृशि तथा समाज पर जोर दिया जा रहा हैं।

**ग्रामीण पुस्तकालय** : ग्रामीण स्तर पर पुस्तकालय ग्राम सभा, ग्राम पंचायत के अर्न्तगत स्थापित किये जाते है। ग्रामीण स्तर पर एक अच्छा पुस्तकालय समाज में फैली हुई बुराई एवं कुरीतियों को मिटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

**ग्रामीण पुस्तकालयों में कृषि सूचनाएं** : ग्रामीण पुस्तकालय में कृषि से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की जाती है। भारत एक कृषि प्रधान देश है जो गॉवों में बसता है। गॉव का विकास देश का विकास। कृषि सूचनाए समय पर ग्रामीण स्तर पर पहुॅचाने में आधुनिक साधनों में रेडियों टेलीविजन, समाचार पत्र, कृषि पत्रिकाए, ई.चौपाल, किसान चैनल आदि महतवपूर्ण भूमिका निभाते है।

ग्रामीण स्तर पुस्तकालय में ग्राम पंचायत द्वारा थोडी सी लागत में एक अच्छा पुस्तकालय स्थापित किया जा सकता है। कृषि से सम्बन्धित राष्ट्रीय स्तर की प्रमुख पत्र पत्रिकाऐ निम्नलिखित हैं जो कि कम कीमत पर उपलब्ध हो सकती है।

1. **कुरूक्षेत्र** : यह पत्रिका हिन्दी एवं अंग्रेजी में उपलब्ध हैं इस पत्रिका में समय समय पर भारत सरकार द्वारा प्रोयोजित योजनाओं की जानकारी एवं विभिन्न राज्यों की विकास गाथा ग्रामीण परिपेक्ष्य में, एवं संचार क्रान्ति से सम्बन्धित लेख प्रकाशित होते हैं।
2. **खेती** : यह मासिक पत्रिका है। व्यवसाय प्रबन्धक कृषि ज्ञान प्रबन्ध निदेशालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि अनुसंधान भवन, पूसा नई दिल्ली से प्रकाशित होती है इस पत्रिका में खेती बाडी, फल फूल, साग सब्जी, पशुपालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, एवं स्वास्थ्य से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हाते हैं।
3. **योजना** : यह पत्रिका हिन्दी एवं अंग्रेजी में उपलब्ध हैं। प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली द्वारा किया जा रहा है। इस पत्रिका में भी समय समय पर भारत सरकार द्वारा प्रोयोजित योजनाओं की जानकारी एवं विभिन्न राज्यों की

विकास गाथा ग्रामीण परिपेक्ष्य में संचार क्रान्ति से सम्बन्धित लेख प्रकाशित होते है।

4. **इण्डियन फार्मिंग** : यह मासिक पत्रिका है। व्यवसाय प्रबन्धक कृषि ज्ञान प्रबन्ध निदेशालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि अनुसंधान भवन, पूसा नई दिल्ली से प्रकाशित होती है एवं प्राप्त की जा सकती है इस पत्रिका में खेती बाडी, पशुपालन, मुर्गी पालन एवं मत्स्य पालन से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हाते है।

5. **इण्डियन होर्टीकल्चर** : यह द्विमासिक पत्रिका है। व्यवसाय प्रबन्धक कृषि ज्ञान प्रबन्ध निदेशालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि अनुसंधान भवन, पूसा नई दिल्ली से प्रकाशित होती है इस पत्रिका में बागवानी से सम्बन्धित लेख प्रकाशित होते है।

6. **जैविक खेती सूचना पत्र** : यह तिमाही पत्रिका है। राष्ट्रीय जैविक खेती केन्द्र, सी.जी.ओ.काम्प्लेक्स द्वितीय, कमला नेहरू नगर, गाजियाबाद से प्रकाशित होती है तथा निशुल्क उपलब्ध है। .इस पत्रिका में जैविक खेती के उत्थान, प्रचार प्रसार व इसके नियामक तंत्र से जुडे लेख, नयी सूचनाएँ, नये उत्पाद विशेषज्ञों के विचार, नयी विकसित प्रकियाए, सेमिनार –कान्फ्रेंन्स इत्यादि की सूचना तथा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समाचार विशेष रूप से आमन्त्रित व प्रकाशित होते हैं।

7. **अक्षय उर्जा** : यह पत्रिका हिन्दी एवं अंग्रेजी में उपलब्ध हैं। यह द्विमासिक पत्रिका है। यह मिनिस्टरी ऑफ न्यू एण्ड रिनेवल एनर्जी, भारत सरकार, नई दिल्ली से प्रकाशित है। यह पत्रिका निशुल्क उपलब्ध है।

8. **विज्ञान प्रगति एवं सांइस रिर्पोटर** : यह पत्रिका मासिक प्रकाशित है। जो कि राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्त्रोत संसथान नई दिल्ली से प्रकाशित होती है। इस पत्रिका में विज्ञान, वन, शारीरिक संरचना पशु, मनुष्य की संरचना वैज्ञानिक आविष्कार, वैज्ञानिकों की जीवनी, भौतिकी, रसायन एवं गणित विषय पर जानकारी दी जाती तथा मनुष्य के स्वास्थ्य से सम्बब्धित लेखो का भी प्रकाशन होता है।

9. **किसान भारती एवं इण्डियन फार्मस डाइजेस्ट** : व्यवसाय प्रबन्धक कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर से मासिक प्रकाशित होती है। इस पत्रिका में खेती बाडी, बागवानी, पशुपालन, मुर्गी पालन एवं मत्स्य पालन, पौध रोग, कीट विज्ञान आदि से सम्बन्धित नवीन लेख प्रकाशित होते हैं।

10. **किसान कल्याण** : यह मासिक पत्रिका है। यह पत्रिका त्रिलोचन नगर, भोपाल से प्रकाशित होती है। यह पत्रिका मध्यप्रदेश के अलावा उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाना एवं छत्तीसगढ से भी प्रकाशित होती है। इस पत्रिका में विभिन्न फसलों के उत्पादन, बागवानी, पशुपालन तथा उनमें लगने वाली बीमारियों, कीट पतंगों से बचाव की जानकारी उपलब्ध हैं। इस पत्रिका में मौसम के अनुसार फसलों के विशेषांक भी प्रकाशित होते है इन विशेषांकों में फसल की सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध होती है। शासन के द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी, मनुष्य एवं पशुओं के विभिन्न रोगों से बचाव की जानकारी, स्वस्थ कैसे रहे के लिए योगा एवं खानपान की जानकारी, कृषि यंत्र एवं अन्य वाहनों की बिक्री, सर्विस एवं रखरखाव की जानकारी प्रकाशित होती है। माह के तीज त्योंहार, मूहर्त, बैंकों की विभिन्न कृषि ऋण योजनाओं आदि की भी जानकारी उपलब्ध रहती है। विषय विशेषज्ञों के साथ वार्ता, प्रगतिशील किसानों के विचार प्रकाशित किये जाते है। कृषि से सम्बन्धित विभिन्न विज्ञापनों का भी समावेश किया गया है।

11. **अन्य पत्रिकाएं** : जिनसे कृशि संबंधित जानकारियां प्राप्त होती है : –

अ. **भूमि निर्माण** : यह पत्रिका मासिक पत्रिका है। जिसका प्रकाशन भोपाल से मासिक किया जाता है। यह पत्रिका मध्यप्रदेश के अलावा उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, झाारखण्ड एवं पंजाब से प्रकाशित होती है।

ब. **आयुर्वेद पभाुस्वास्थ्य संसार** : यह पत्रिका मासिक पत्रिका है। प्रकाशक आयुर्वेद लिमिटेड, दिल्ली से प्रकाशित होती है। इस पत्रिका में पशुपालन पर सम्पूर्ण जानकारी दी जाती है। इस में पशुस्वास्थ्य समस्याएं व सुझाव, विशेषज्ञों के लेख, पशुओं की नस्ले, कृषि व पशुपालन के अतिरिक्त पशुपालन एवं कृषि से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान कविता एव कहानी के माध्यम से समावेश किया है। आयुर्वेद पशु स्वास्थ्य संसार प्रतियोगिता का भी समावेश किया गया है। ज्ञान की गंगा में कविता के माध्यम से फसल एवं पशुओं के रखरखाव की जानकारी दी गयी है।

स. **कृषि तहलका** : यह मासिक पत्रिका है। विजय नगर, इंदौर से मासिक प्रकाशित होती है। इसमें कृशि से संबंधित सभी पहलुओं पर जानकारी उपलब्ध है।

द. **आत्मा संदेभा** : यह मासिक पत्रिका है, जो भोपाल से प्रकाशित होती हैं। जिसे निशुल्क प्राप्त किया जा सकता है।

इ. **हरित मालव** : यह मासिक पत्रिका है। यह हरित मालव कृषि समाचार पत्र, इंदौर से मासिक प्रकाशित होती है।

इस पत्रिका में मालवा क्षेत्र में कृशि समस्याओं के साथ कृशि विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी उपलब्ध होती है।

उपरोक्त पुस्तकालयों, पत्र–पत्रिकाओं तथा आधुनिक तकनीकी आधारित संसाधनों ने मानव समाज की नई विकास गाथा लिखी है। आज का समाज उन्नत बीज, उर्वरक, कृशि यंत्रों, अधिक फसल, सिचाई की नई विधियों एवं कृशि हेतु वैज्ञानिक आधारित तकनीकों का प्रयोग कर रहा है। भारत जैसे राश्ट्र की अर्थव्यवस्था की उन्नति व प्रगति कृशि पर आधारित है। अतः कहा जा सकता है कि समाज के विकास हेतु कृशि विज्ञान पर अधिक बल दिये जाने की आज की आवश्यकता है, क्योंकि कृशक समाज की उन्नति में ही राश्ट्र की उन्नति के बीज अंकुरित होंगे।

**निष्कर्ष :**

कृशि विश्वविद्यालयों एवं पुस्तकालयों में कृशि विज्ञान साहित्य से संबंधित ज्ञान का भंडार है। टेलीविजन एवं रेडियों द्वारा भी विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से कृशि क्षेत्र में दिन प्रतिदिन हो रहे विकास से समाज को अवगत कराया जा रहा है कृशि पुस्तकालयों हेतु ज्ञान साझा करने हेतु एक उन्नत कन्र्सोशिया बनाने की आवश्यकता है जिसमें अधिक से अधिक कृशि पुस्तकालय अपना योगदान देकर समाज में कृशि साहित्य के ज्ञान को ज्यादा से ज्यादा प्रसारित कर सके। कृशि साहित्य की पत्रिकाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकाधिक मात्रा में एवं कम से कम दरों पर उपलब्ध करवाया जाना चाहिए ताकि ग्रामीण किसान उक्त पत्रिकाओं के माध्यम से अधिकाधिक जागरूक होकर कृशि उत्पादन की मात्रा बढ़ाकर देश की अर्थव्यवस्था में अपना अधिकाधिक योगदान दे सके। आधुनिक युग में कृशक समाज ज्ञान के विभिन्न माध्यमों जैसे कृशि विज्ञान केन्द्र, पुस्तकालय, टेलीविजन, रेडियो, मोबाइल, इंटरनेट आदि से प्राप्त कर रहा है तथा राश्ट्र व समाज को उन्नत अर्थव्यवस्था की ओर ले जा रहा है। अतः हम कह सकते है कि सभी आधुनिक संसाधनों एवं तकनीकों ने मानव समाज व सभ्यता पर अपना प्रभाव छोड़ा है जो आज स्पश्ट दिखाई देता है।

**सन्दर्भ :–**


1. Ramesh, L.S.R.C.V. and Hussain, Mohd Vali. Agricultural Technology Transfer Vis a Vis Agricultural Network System. *International Library Movement*. 30 (2) 2008, pp. 83-89.
2. www.http://yojana.gov.in/about.asp
3. http://www.agriculture.com/
4. http://agricoop.nic.in/
5. Biradar, B.S., Kumar, P. Dharani and Mahesh, Y. (2009). "Use of information sources and services in library of Agriculture Science College, Shimoga: a case study". *Annals of Library and Information Studies*. Vol. 56, June 2009, pp. 63- 68
6. https://agriculture.rajasthan.gov.in/content/agriculture/hi/Agriculture/Plans-and-programs/important-activities/information-dissemination.html
7. https://hi.vikaspedia.in/agriculture/crop-production/
8. Rajput, P.S. Kumar, Pradeep and Naidu, GHS. (2009) "Agricultural Information System and Services in Digital Era". *Indian Journal of Agricultural Library and Information Services*. 25 (1) Jan.-June, pp 15-19.
9. Swamy, H.M. Chidananda and Udayakumar, D.S. Role of Quality Agricultural Library Network through Internet: With Special Reference to Digital Resources and Services. In Kaul, H.K. and Patil, S.K. Eds. Proceeding *NACLIN* 2004, pp. 105-118.


❐❐❐